दीपोत्सव के पावन पर्व की सभी पाठकों को हार्दिक मंगलकामनाएं

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

कार्तिक कृ. 6, वि.2079, युगाब्द 5124, 16 अक्टूबर, 2022

सरसंघचालक जी का विजयादशमी उद्बोधन

बात पांथिक जनसंख्या असंतुलन की

संघ के विजयादशमी उत्सव (नागपुर) की मुख्य अतिथि श्रीमती संतोष यादव
डॉ. हेडगेवार की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए। साथ में हैं सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

ध्यानाकर्षण

पाथेय कण का 16 सितंबर का अंक देखा। लव-जिहाद जैसे भीषण ज्वलंत एवं अति संवेदनशील विषय का ध्यानाकर्षण कराता आवरण पृष्ठ और सत्य-तथ्य एवं शोध परक जानकारियों से परिपूर्ण आमुख कथा इस समस्या के समाधान के प्रति लोक जागरण करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होगी। लव-जिहाद को प्रभावी ढंग से प्रकाश में लाने के लिए पाथेय कण परिवार को कोटि-कोटि प्रणाम, साधुवाद, आभार एवं धन्यवाद।

-डॉ.विपिन पाठक, जयपुर
अ.भा.साहित्य परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री

जानकारी युक्त

पाथेय कण के सितम्बर माह के द्वितीय अंक में लव-जिहाद के बारे में दी गई विस्तृत जानकारी सामाजिक जनजागृति के लिए आवश्यक है। आज वास्तव में लव-जिहाद एक बहुत ही गंभीर समस्या के रूप में हिंदू समाज के सामने खड़ी हो रही है। सैकड़ों-हजारों ऐसे प्रकरण हैं जो सुर्खियों में नहीं आ पाते, आज आवश्यकता है समाज में, अपने परिवारों में, विद्यालयों में विचार-गोष्ठियों के माध्यम से जन-जागृति एवं जागरूकता फैलाई जाए ताकि हमारे परिवार की बहन-बेटियां इन जल्लादों के प्रेम जाल में ना फंसे और इनका प्रतिकार करे। संपादक महोदय द्वारा इस विषय में दी गई जानकारी वास्तव में प्रशंसनीय है। वर्तमान परिदृश्य में ऐसी और अनेकों सामाजिक घटनाओं को भी पाथेय में उचित स्थान मिले।

-दौलतराम सैनी,डीग, भरतपुर

विविध पृष्ठ सराहनीय

पाथेय कण का 16 से 30 सितम्बर का अंक प्राप्त हुआ, पढ़ा। आप द्वारा संपादित पृष्ठ विविध में जिस प्रकार सभी विषयों को संक्षिप्त रूप से समाहित कर सामान्य जानकारी प्रदान करने का प्रयास किया है, बहुत ही सराहनीय है।

-अमित सेकडा, सैंथल मोड़, दौसा

संघे शक्ति कलोयुगे

पाथेय कण 16 सितंबर के अंक के आमुख लेख में 'बहिष्कार किया जाना फिल्म लाल सिंह चड्ढा का'अत्यंत संगत लगा, जिसमें जागरूक समाज ने कैसे आमिर खान जैसे दोगले चरित्र के व्यक्तित्व को उचित जवाब दिया। जैसे शस्त्र के बिना शास्त्र अधूरा होता है, वैसे ही संगठन के बिना समाज की अच्छाइयां अपूर्ण होती हैं। इसीलिए भगवद्गीता में लिखा है 'संघे शक्ति कलोयुगे'

-सरिता जोशी,
साकेत, सुराणा की बड़ी पोल, नागौर

संग्रहणीय

प्रत्येक कुटुंब (परिवार) भक्तिमय, शक्तिमय व आनन्दमय हो तो देश-समाज की समस्या खत्म हो जाएगी। पाथेय कण में पिछले कई अंकों में कुटुंब प्रबोधन के विषय प्रकाशित हो रहे हैं,यह आवश्यक भी है। कृपया इसे विस्तार से लिखें। विविध पृष्ठ पर गीता दर्शन, आओ संस्कृत सीखें, कुकिंग टिप्स, गौरव के क्षण, घरेलू नुस्खा, हमारे मंत्र व प्रार्थना पठनीय व संग्रहणीय है।

-उमाशंकर शर्मा, नया बाजार, अजमेर

लव-जिहाद

पाथेय कण का 16 सितबर का अंक पढ़ा। अंक में झारखंड की एक हिन्दू छात्रा की मुस्लिम युवक द्वारा पेट्रोल डालकर जला देने का समाचार पढ़ा। जिस प्रकार से देश भर में लव-जिहाद की घटनाएं बढ़ रही हैं ये भविष्य के लिए एक बड़े संकट का संकेत हैं। समय रहते सम्पूर्ण हिन्दू समाज को इस बारे में चिंतन करना चाहिए। हमारी बहिन-बेटियों को भी जागरूक करना पड़ेगा जिससे वे इन लव-जिहादी भेड़ियों से बच कर रह सकें। इस प्रकार के घृणित कृत्य करने वालों को कठोरतम सजा मिले ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

-सत्ताराम बेनीवाल, वेडिया, जालोर

जागरूकता की कमी

16 सितंबर के अंक में लव-जिहाद पर दी गई कवर स्टोरी पढ़ी। लव-जिहाद को लेकर जागरूकता की कमी के कारण हमारी बेटियां इन जिहादियों की शिकार होती जा रही हैं। असावधानी मृत्यु का कारण बन सकती हैं। हमारे समाज ने आधुनिकता के चक्कर में आकर अपने सामाजिक मूल्यों को कम समझा लेकिन यही मूल्य हमें आपस में जोड़ने हैं, जीवन सही दिशा में जीने की राह बताते हैं। हम अपने मत पर गर्व करेंगे तो अन्य मत आकर्षक लगने का प्रश्न ही नहीं उठेगा। अपने मूल्यों की श्रेष्ठता निरंतर ध्यान में रहनी चाहिए। प्रेम और स्नेह सभी संबंधों का मूल हैं। घर, परिवार, समाज, देश, प्रत्येक जगह आपस में जोड़ने वाला तत्व है स्नेह।

-इंदु, राजसमंद

विशेषांक

1 व 16 अगस्त के पाथेय कण का संयुक्तांक 'स्वराज संघर्ष यात्रा-2' स्वाधीनता के अमृत महोत्सव (स्वराज-75) पर प्रकाशित विशेषांक ने गागर में सागर भर दिया है। देश के लिए बलिदान हुए क्रांतिकारियों, सेनानियों और उनके परिवार जनों से उनके प्रति की गई उपेक्षा के लिए क्षमा याचना करनी चाहिए। उनके जन्म स्थानों पर उनका स्मारक बनाकर प्रतिवर्ष कुछ सार्थक आयोजन प्रारंभ होने चाहिए।

-हुकमचन्द चौधरी, सपोटरा, करौली

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- भक्ति आधारित शक्ति के प्रवर्तक गुरु नानकदेव जी
  https://patheykan.com/?p=17522
- मतांतरितों को आरक्षण का लाभ देना संवैधानिक डकैती
  https://patheykan.com/?p=17518
- निःशस्त्र प्रतिकार संग्राम में थी संघ के स्वयंसेवकों की भूमिका
  https://patheykan.com/?p=17541

पाक्षिक
पाथेय कण

कार्तिक कृ.6 से
कार्तिक शु.7 तक
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

16-31अक्टूबर, 2022
वर्ष : 38
अंक : 13

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
संजय सुरोलिया

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने की शिकायत हेतु सम्पर्क
(प्रातः10 से सायं 5 बजे तक)
सुरेश शर्मा
9413645211
विज्ञापन हेतु सम्पर्क
ओमप्रकाश
9929722111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

बात पांथिक जनसंख्या असंतुलन की

श्री विजयादशमी उत्सव पर सरसंघचालक जी ने देश और समाज को प्रभावित करने वाले कई विषयों पर विचार प्रकट किए। उनका उद्बोधन सुविचारित और तार्किक था। विविधता का सम्मान करते हुए कैसे देश में सब मत-संप्रदाय के लोग स्नेहपूर्वक साथ रह सकते हैं, इसके लिए उन्होंने तीन आधार स्तम्भों की चर्चा की। परन्तु, मीडिया और राजनीतिक नेतृत्व को संभवतः ऐसी बातों में रूचि नहीं है, तभी तो इस वर्ग ने उनके उद्बोधन के एक छोटे भाग 'जनसंख्या नियंत्रण' पर ही ध्यान दिया। लगभग सभी समाचार पत्रों में इसी मुद्दे पर संपादकीय लिखे गए या लेख प्रकाशित किए गए। टीवी चैनल्स ने इसी मुद्दे पर बहस-चर्चा कराई। तो, चलिए इस जनसंख्या नियंत्रण के मुद्दे पर ही बात की जाए।

सरसंघचालक जी ने जनसंख्या नियंत्रण से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए सबके लिए समान नीति अपनाने की बात कही। साथ ही पंथ-संप्रदायशः जनसंख्या असंतुलन न हो, यह भी कहा। कुछ नेताओं ने कहा कि भागवत जी अपना एजेंडा आगे बढ़ा रहे हैं। वे क्यों न करें ऐसा? संघ का एजेंडा है- देश, समाज की एकता-अखंडता को सुनिश्चित करते हुए समृद्धि और परम वैभव। इस एजेंडे से किसी को ऐतराज है क्या?

देश की एकता-अखंडता के लिए जमीनी वास्तविकताओं को नकार कर विचार करना क्या उचित है? जमीनी वास्तविकता तो यही है ना कि देश में पंथ-सम्प्रदायशः जनसंख्या का असंतुलन होने के कारण ही अपनी इस मातृभूमि का अंग-भंग हुआ और अपने पुरखों की भूमि पर एक शत्रु राष्ट्र का उदय हो गया। सीने पर हाथ रखकर विचार करें कि जो भू-भाग पाकिस्तान व बांग्लादेश बन गए वहां यदि हिंदू बहुल आबादी होती तो क्या देश का विभाजन होता? नहीं ना, तो फिर वैसी स्थिति देश में फिर से निर्माण नहीं हो, इसका ध्यान रखना पड़ेगा या नहीं? यही बात तो सरसंघचालक जी ने कही है।

डॉ.भागवत तीन अन्य देशों के उदाहरण अपनी बात के समर्थन में देते हैं। 1975 में इंडोनेशिया से ईसाई बहुल 'ईस्ट तिमोर', 2008 में सर्बिया से मुस्लिम बहुल 'कोसावा'तथा 2011 में सूडान से ईसाई बहुल 'दक्षिणी सूडान' के हिस्से टूट कर नए देशों का निर्माण हुआ या नहीं?

और फिर जब सरसंघचालक जी 'पांथिक जनसंख्या असंतुलन' की बात करते हैं तो इसे मुसलमानों के विरुद्ध क्यों मान लिया जाता है? जो मुस्लिम बंधु विभाजन के बाद भारत में रह गए थे, यह मान लिया जाना चाहिए कि वे भारत विभाजन के विरुद्ध थे और उन्होंने अपना भाग्य भारत देश के साथ जोड़ लिया था। उन्हें इसी देश के लिए जीना-मरना है। तब यह उनकी भी जिम्मेदारी नहीं हो जाती क्या कि देश का और बंटवारा न हो? पिछले दिनों कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन पीएफआई के कार्यालयों एवं पदाधिकारियों पर देशभर में पड़े छापों में क्या निकल कर आया? यही ना, कि वे 2047 तक इस देश को मुस्लिम राष्ट्र बनाने की योजना में लगे हुए थे। इसके लिए विदेशों से अपार पैसा आ रहा था और हजारों वर्कर्स को प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

ओवैसी जैसे कुछ मुस्लिम नेताओं को कहते सुना गया कि भागवत मुसलमानों को डरा रहे हैं। भई, भागवत जी ने जनसंख्या नीति सब पर समान रूप से लागू करने की बात की है, यह तो नहीं कहा कि वह केवल मुसलमानों पर लागू हो, फिर आप मुसलमानों में क्यों भय पैदा कर रहे हो? ऐसे नेता आंकड़ों को भी तोड़ मरोड़ कर भड़काने के लिए प्रयोग करते हैं। कहा गया कि मुसलमानों में 'प्रजनन दर'(टीएफआर) घटी है। यदि घटी है तो ठीक है ना, फिर डरने की क्या बात है? दरअसल बात कुछ अलग है।

धार्मिक समूह	प्रजनन दर
हिंदू	1.94
सिख	1.61
बौद्ध	1.39
जैन	1.60
भारत में उत्पन्न धर्म (हिंदू+जैन+बौद्ध+सिख)	1.63
मुसलमान	2.36
ईसाई	1.88
भारत समग्र	2

केन्द्र सरकार की ओर से नेशनल फैमिली हैल्थ सर्वे (एनएफएचएस) किया जाता है। चौथे सर्वे से पांचवें सर्वे के बीच मुसलमानों में 'प्रजनन दर'घटी है, यह सच है। परंतु सभी धर्मावलम्बियों में ही यह दर घटी है। प्रजनन दर घटने के बावजूद वर्तमान प्रजनन दर क्या है? आइये, जरा देखें।

प्रजनन दर भावी आबादी का संकेत होती है। इस सारणी को ध्यान से देखेंगे तो स्पष्ट होगा कि अभी भी मुसलमानों में सबसे अधिक है यह दर। जहां भारतीय धर्मों की 100 महिलाएं अपने पूरे जीवन काल में 163 बच्चों को जन्म देती हैं, वहीं 100 ईसाई महिलाएं 188 बच्चों को तथा 100 मुस्लिम महिलाएं 236 बच्चों को जन्म देती हैं अर्थात् मुस्लिम महिलाएं 38 प्रतिशत ज्यादा बच्चों को जन्म दे रही हैं। जनगणना के आंकड़े तो सबको ज्ञात ही हैं।

बात ज्यादा बच्चों के जन्म की ही नहीं है। करोड़ों मुस्लिम →

सरसंघचालक जी का विजयादशमी उद्बोधन

स्त्री-पुरुष समानता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक समता, रोजगार परक आर्थिक नीति, पंथ-संप्रदायशः जनसंख्या असंतुलन, विविधता का सम्मान, अल्पसंख्यकों से संवाद आदि विषयों पर रखे अपने विचार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना दिवस श्री विजयादशमी पर नागपुर में सरसंघचालक जी द्वारा दिए गए उद्बोधन की सबको प्रतीक्षा रहती है। यही कारण है कि सभी प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने उनके उक्त भाषण को प्रकाशित-प्रसारित किया। प्रस्तुत है उनके उद्बोधन को समेटे यह विशिष्ट आलेख।

इस बार के विजयादशमी उत्सव के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के नाते श्रीमती संतोष यादव को आमंत्रित किया गया था। श्रीमती यादव ने गौरीशंकर पर्वत (जिसे आम भाषा में माउंट एवरेस्ट कहते हैं) पर दो बार सफलतापूर्वक चढ़ाई की है।

संघ में पहले भी महिलाएं बनी हैं अतिथि

देशभर में लगभग सभी प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने श्रीमती संतोष यादव को इस कार्यक्रम का अध्यक्ष बनाए जाने को संघ के इतिहास में पहली घटना बताया। परंतु डॉ.भागवत ने बताया कि संघ के कार्यक्रमों में प्रबुद्ध एवं कर्तृत्व संपन्न महिलाओं को पहले भी अतिथि के नाते

बुलाया जाता रहा है। उन्होंने इसके उदाहरण भी दिए।

पुरुष-महिलाओं की हो सभी क्रियाकलापों व निर्णय में समान सहभागिता

डॉ.भागवत ने कहा कि संघ की शाखा पद्धति में भले ही पुरुष एवं महिलाओं की शाखा अलग-अलग लगती है, परंतु बाकी सभी प्रकार के संगठनों व कार्यों में महिला-पुरुष साथ मिलकर ही कार्य कर रहे हैं। भारतीय परंपरा में इन्हें एक-दूसरे का पूरक मानकर विचार किया गया है। परंतु लगातार विदेशी आक्रमणों की परिस्थिति के कारण इस सोच में कमी आई और बाद में एक आदत बन गई। उन्होंने कहा कि मातृशक्ति को पूजा की वस्तु बनाना या उन्हें रसोई तक सीमित कर देना-ये दोनों अतिवादी दृष्टिकोण हैं, जिनसे

संपादकीय शेष... घुसपैठिए बांग्लादेश से और रोहिंग्याओं के रूप में म्यामांर से आ गए हैं। एक वरिष्ठ और सम्मानित पत्रकार ने हाल ही में बताया कि लगभग 8 लाख हिंदू प्रतिवर्ष कन्वर्जन(मतांतरण) कर मुसलमान बनाए जा रहे हैं। लव-जिहाद तो है ही।

1941 में जहां मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में ईसाई जनसंख्या 1% से भी कम थी, वहीं 2011 में क्रमशः 74%, 87% तथा 88% तक पहुँच गई। इन तीनों ही प्रांतों को भारत से अलग कर नया देश बनाने के लिए पूर्व में उठायी गई मांग के पीछे क्या यह पांथिक जनसंख्या असंतुलन नहीं था?

इसलिए सरसंघचालक जी ने जो कहा उस पर विचार किया जाना चाहिए। गंभीरता से विचार होना चाहिए। आम मुसलमानों या ईसाइयों की नीयत पर कोई भी प्रश्नचिह्न नहीं उठा रहा है। परंतु कट्टरपंथी और जिहादी तत्व उन्हें भड़काने का कार्य नहीं कर रहे हैं क्या? यदि वर्तमान में वक्फ और मदरसों का सर्वे होकर उनके कार्य को व्यवस्थित किया जाने का प्रयास हो रहा है तो इसमें किसी को भी क्यों परेशान होना चाहिए? कुछ लोग हैं, जो मजहब के नाम पर सामान्य लोगों को बरगला कर अपने स्वार्थों की पूर्ति में अवैध कार्य करते रहते हैं। वे अपने समाज का भला नहीं कर रहे हैं। ऐसे लोगों पर अंकुश लगाने से आम मुसलमानों और ईसाइयों का भला ही होने वाला है।

भारतीय मुस्लिम और ईसाई भाइयों को भी विचार करना होगा कि इस देश को यदि एक रखना है तो देश के किसी भी हिस्से में पंथ-सम्प्रदायशः-जनसंख्या असंतुलन नहीं होने पाए। लोकतंत्र, सेक्युलरिज्म, समानता जैसे कई मूल्य तभी तक सुरक्षित रहेंगे जब तक देश हिंदू बहुल बना रहता है। स्वयं श्रीमती सोनिया गांधी ने वर्षों पूर्व बेलूर मठ (प.बंगाल) स्थित रामकृष्ण मिशन में दिए अपने उद्बोधन में यह बात स्वीकार की थी।

आशा है, शासन-प्रशासन और राजनीतिक दल पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर सरसंघचालक जी के उद्बोधन को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक कदम उठाएंगे और जैसा कि भागवत जी ने कहा है, समाज को भी इस कार्य में सहयोग करना चाहिए। ● **-रामस्वरूप अग्रवाल**

मुख्य अतिथि श्रीमती संतोष यादव संबोधित करती हुई

बचना चाहिए। उनके सशक्तिकरण के साथ ही सभी क्रियाकलापों में व निर्णय प्रक्रिया में उनकी समान सहभागिता रहनी चाहिए। डॉ.भागवत ने कहा कि इसे परिवार स्तर से प्रारंभ करते हुए सभी संगठनों व कार्यों में फलीभूत करना होगा।

भारत बन रहा है आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी विश्व में बढ़ा है भारत का सम्मान

सरसंघचालक जी ने वर्तमान केन्द्रीय सरकार की भारत को आत्मनिर्भर व बलशाली बनाने तथा अर्थव्यवस्था को गतिमान करने की नीति सहित विश्व पटल पर बढ़ती भारत की प्रतिष्ठा की सराहना की। देश की सुरक्षा के लिए किए जा रहे प्रयासों को भी उन्होंने अच्छा बताया।

उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता के मार्ग पर बढ़ने के लिए राष्ट्र के आत्मस्वरूप को समझना आवश्यक है। जहां शासन–प्रशासन व नेताओं को अपने कर्तव्य पथ पर चलना होगा, वहीं समाज को भी अपने कर्तव्यों को निभाना होगा।

परंपरा और वर्तमान का समन्वय आवश्यक

डॉ. भागवत ने कहा कि नई रचना बनाते समय हमें परंपरा और वर्तमान का समन्वय करना चाहिये? कालबाह्य हो गयी बातों को छोड़कर वर्तमान समय और देश के अनुकूल परंपराएं बनानी होंगी। परंतु यह ध्यान रखना होगा कि हमारी पहचान, संस्कृति, जीवन दृष्टि आदि से संबंधित शाश्वत मूल्यों का क्षरण न हो। उनके प्रति श्रद्धा और आचरण पूर्ववत बना रहे।

झूठे विमर्श और द्वेष फैलाने वालों का करें प्रतिकार

सरसंघचालक जी ने अपने उद्बोधन में झूठे विमर्श फैलाकर भ्रम पैदा करने वालों तथा समाज के विभिन्न वर्गों में स्वार्थ व द्वेष के आधार पर दूरियां और दुश्मनी बनाने वालों को आड़े हाथों लिया और कहा कि हमें उनका प्रतिकार करना चाहिए। देश की सुरक्षा और एकात्मकता के लिए शासन प्रशासन को समाज का सहयोग और बल मिलना चाहिए।

मातृ भाषा का कितना करते हैं उपयोग? उद्यम, साहस और सूझबूझ भी जरूरी

'समाज की जागृति के बाद ही विश्व में बड़े परिवर्तन आ पाए हैं,' इसे रेखांकित करते हुए उन्होंने 'नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा' की नीति पर चर्चा की और कहा कि हमें अपने बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा दिलाने के लिए तैयार होना होगा। उन्होंने कहा कि आर्थिक उन्नति अथवा अच्छे कैरियर के लिए भाषा से अधिक उद्यम, साहस व सूझबूझ की आवश्यकता होती है। उन्होंने प्रश्न किया कि क्या हम अपनी मातृभाषा में हस्ताक्षर करते हैं? क्या हम अपने निमंत्रण पत्र या घर पर नाम–पट्टिका में मातृभाषा का प्रयोग करते हैं?

शिक्षा केवल कक्षा में ही नहीं अपितु घर व समाज से भी

डॉ. भागवत ने कहा कि शिक्षा केवल कक्षाओं में ही नहीं होती। घर में संस्कारयुक्त वातावरण बनाने में अभिभावकों की भूमिका रहती है। समाज में भद्रता व अनुशासन बनाए रखने वाले माध्यमों, नेताओं व उत्सव–मेले आदि के आयोजनों की भी बड़ी भूमिका रहती है।

व्यापारिक मानसिकता से मुक्त हो चिकित्सा

उन्होंने स्वच्छता, योग–व्यायाम तथा व्यापारिक मानसिकता से मुक्त, सस्ती व गुणवत्ता वाली चिकित्सा की उपलब्धता पर जोर दिया ।

आवश्यक है सामाजिक समता मंदिर, कुआं व श्मशान हो सबके लिए

सरसंघचालक जी ने सामाजिक समता को लाए बिना वास्तविक व टिकाऊ परिवर्तन नहीं आने संबंधी बाबा साहब आंबेडकर जी की चेतावनी की चर्चा करते हुए कहा कि हमारे मन और आचरण से विषमता हटानी होगी। समाज के सभी वर्गों में सहज रूप से मित्रता के, अनौपचारिक आने–जाने व उठने–बैठने के संबंध बनने चाहिए। उन्होंने कहा कि मंदिर, कुआं (पानी) तथा श्मशान सभी के लिए बराबर खुले रहने चाहिए। उन्होंने कहा कि भारतीय चिंतन पर आधारित उपभोगवाद व शोषण रहित विकास के लिए समाज और अपने जीवन से भी भोगवृत्ति व शोषक वृत्ति को हटाना पड़ेगा।

रोजगार परक हो आर्थिक नीति गांवों में हों सभी सुविधाएं

देश की आर्थिक नीति रोजगार उन्मुख होने पर जोर देते हुए भागवत जी ने कहा कि रोजगार का अर्थ केवल नौकरी नहीं होता। हमें उद्यमिता की तथा स्वरोजगार की प्रवृति को प्रोत्साहित करना होगा। प्रत्येक जिले में रोजगार प्रशिक्षण तथा जिले में ही रोजगार

मिलने पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदि की सुविधाएं सुलभ होनी चाहिए। सरकारी प्रयत्नों के साथ ही समाज का संगठित बल भी बहुत कुछ कर सकता है। इस संबंध में उन्होंने देश के लगभग 275 जिलों में स्वदेशी जागरण मंच के साथ मिलकर कई संगठनों, लघु उद्यमियों, संपन्न लोगों को साथ लेकर संघ के स्वयंसेवकों द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की।

जनसंख्या नीति सबके लिए हो समान पंथ-संप्रदायशः जनसंख्या असंतुलन से टूटते हैं देश

बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आगामी 50 वर्षों के पश्चात् आज के तरुण प्रौढ़ बनेंगे, तब उनकी संभाल के लिए कितने तरूण आवश्यक होंगे यह गणित भी हमें करना चाहिए। माताओं के स्वास्थ्य, आर्थिक क्षमता, शिक्षा, परिवार की आवश्यकता व पर्यावरण से भी इसका संबंध है। अतः जनसंख्या नीति इन सब पर विचार करते हुए बने और सभी पर समान रूप से लागू हो। उन्होंने समाजशास्त्रियों एवं मनोविज्ञानियों के मत की चर्चा करते हुए कहा कि बहुत छोटे परिवारों के कारण बच्चों के स्वास्थ्य व समग्र विकास, असुरक्षा का भाव, सामाजिक तनाव, एकाकी जीवन तथा समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था के प्रश्न भी इससे जुड़े हुए हैं।

डॉ. मोहन भागवत ने पंथ-संप्रदाय के आधार पर जनसंख्या असंतुलन के महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर इशारा करते हुए कहा कि इसके कारण कई देशों की भौगोलिक सीमाओं में परिवर्तन हो गया। उन्होंने बताया कि धार्मिक जनसंख्या असंतुलन बिगड़ने पर इंडोनेशिया से ईस्ट तिमोर, सूडान से दक्षिण सूडान तथा सर्बिया से कोसावा नाम के नए देश बन गए। जन्मदर की असमानता के साथ ही लोभ, लालच या जबरदस्ती से चलने वाला मतांतरण और घुसपैठ भी जनसंख्या असंतुलन के बड़े कारण हैं। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण पर विचार करते समय पांथिक (धार्मिक) आधार पर जनसंख्या संतुलन भी महत्व का विषय है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

देश हित में त्याग व विविधता का सम्मान

उन्होंने कहा कि देश तथा दुर्बलों के हित में अपना स्वार्थ छोड़ने और त्याग करने के लिए जनता को सदैव तैयार रहना चाहिए। इसके लिए समाज में 'स्व' का बोध व गौरव भाव जगाए रखने की आवश्यकता होती है। अपना यह 'स्व' सबको जोड़ने वाला और पूर्वजों द्वारा सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति से प्राप्त हुआ है। ''अपनी विशिष्टता पर श्रद्धापूर्वक दृढ़ रहते हुए सभी की विविधता व विशिष्टता का सम्मान करना चाहिए- यह बात सिखाने वाला केवल भारत ही है। सब एक हैं, इसलिए सबको मिलजुल कर चलना चाहिए।''

मुख्य अतिथि श्रीमती संतोष यादव का सम्मान करते हुए सरसंघचालक जी

भारतभक्ति, समान पूर्वज और सनातन संस्कृति को सब मानकर चलें- यही राष्ट्रधर्म

प्राचीनकाल से ही सभी प्रकार की विविधता को ससम्मान स्वीकार कर साथ चलने का हमारा स्वभाव है। इस अखंड मातृभूमि की अनन्य भक्ति हमारी राष्ट्रीयता का मुख्य आधार है। भारत भक्ति, हमारे समान पूर्वजों के उज्ज्वल आदर्श और भारत की सनातन संस्कृति, इन तीन आधार स्तंभों द्वारा प्रशस्त पथ पर मिलजुलकर प्रेमपूर्वक चलना यही अपना 'स्व' और अपना राष्ट्रधर्म है। संघ प्रारंभ से इसी भावना को लेकर चल रहा है।

संघ की शक्ति में वृद्धि तथा 'सर्वेषां अविरोधेन' का स्वभाव

आज संघ के उपरोक्त विचार को सुनने-समझने के लिए लोग तैयार दिखाई देते हैं। अज्ञान, द्वेष तथा स्वार्थ के कारण संघ के विरुद्ध जो कुप्रचार चलता है उसका प्रभाव कम हो रहा है। कारण यह है कि संघ के विस्तार और समाज संपर्क यानि संघ की शक्ति में वृद्धि हुई है। दुनिया आपको सुने, इसके लिए शक्तिशाली होना पड़ता है। दुष्ट शक्तियों से बचने के लिए सज्जनों की संगठित शक्ति चाहिए। संघ राष्ट्र विचार का प्रचार-प्रसार करते हुए सम्पूर्ण समाज को संगठित शक्ति के रूप में खड़ा करने का काम कर रहा है। संघ उपरोक्त राष्ट्र विचार को मानने वाले सब लोगों का अर्थात् हिन्दू समाज का संगठन है। हिन्दू धर्म, संस्कृति व समाज का संरक्षण कर हिन्दू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए,''सर्वेषां अविरोधेन''काम करता है।

'ना भय देत काहू को, ना भय जानत आप'

डॉ. भागवत ने कहा कि आज हिन्दू राष्ट्र की बात लोग ध्यान से सुनते हैं तथा कथित अल्पसंख्यकों को संगठित हिन्दू शक्ति से कोई खतरा नहीं होगा। जब अन्याय, अत्याचार, द्वेष का सहारा लेकर गुंडागर्दी करने वाले लोग समाज के प्रति शत्रुता करते हैं तो आत्मरक्षा तो सभी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि 'ना भय देत काहू को, ना भय जानत आप'- ऐसा हिन्दू समाज खड़ा हो।

संघ आपसी भाईचारा व शांति के पक्ष में

उन्होंने कहा कि संगठित हिन्दू समाज समय की आवश्यकता है। यह किसी के विरुद्ध नहीं है। संघ पूरी दृढ़ता के साथ आपसी भाईचारा, भद्रता व शांति के पक्ष में खड़ा है।

जारी रहेगा अल्पसंख्यकों से संवाद
भारत को जानें, मानें और भारत के बनें

डॉ. भागवत ने बताया कि तथाकथित अल्पसंख्यकों में से कुछ सज्जन गत वर्षों में हमसे मिलने आते रहे हैं। उनसे संवाद भी हुआ है। उन्होंने कहा कि यह संवाद होता रहेगा। भारतवर्ष प्राचीन राष्ट्र है। इसकी उस पहचान व परंपरा की धारा के साथ तन्मयतापूर्वक अपनी-अपनी विशिष्टता को रखते हुए हम सभी प्रेम, सम्मान व रीति के साथ राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा मिलकर करते चलें। एक दूसरे के सुख-दुःख में भागीदार बनें, यही एकात्म, समरस राष्ट्र की कल्पना संघ की है।

उदयपुर की घटना की पुनरावृत्ति न हो

उदयपुर की दिल दहला देने वाली घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाएं फिर से न हो, यह सुनिश्चित करना होगा। ऐसी घटना के मूल में पूरा समाज नहीं होता। मुस्लिम समाज के कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने अपना विरोध प्रकट किया। यह विरोध या निषेध अपवाद न बनकर मुस्लिम समाज का स्वभाव बनना चाहिए।

उकसाने पर भी मर्यादित रहे विरोध

उकसाने की कैसी भी बात हो, सभी को संविधान की मर्यादा में रहकर ही अपना विरोध प्रकट करना चाहिए।

'भाई टूटे, धरती खोयी, मिटे धर्मस्थान' का अनुभव लेकर कोई सुखी नहीं होगा

उन्होंने कहा,'यह भाव कि हम भिन्न हैं, अलग हैं, इसलिए हम इस देश के साथ, इसकी मूल जीवनधारा व पहचान के साथ नहीं बढ़ सकते', इस असत्य के कारण 'भाई टूटे, धरती खोयी, मिटे धर्मस्थान'- यह विभाजन का जहरीला अनुभव लेकर कोई भी सुखी तो नहीं हुआ।

तारक मंत्र

''हम भारत के हैं, भारतीय पूर्वजों के हैं, भारत की सनातन संस्कृति के हैं, समाज व राष्ट्रीयता के नाते एक हैं'', यही हमारा तारक मंत्र है। सब इसे अपनाएं।

भारत माता ही हमारी आराध्या
विभाजन हो निरस्त

सरसंघचालक जी ने अपने उद्बोधन के अंत में स्वामी विवेकानन्द के इस आह्वान का स्मरण कराया कि हम भारत माता को ही आराध्या मानकर कर्मरत हों। उन्होंने महर्षि अरविंद के पांच स्वप्नों की चर्चा करते हुए कहा कि उनका पहला सपना था भारत की स्वतंत्रता व एकात्मता। 'जिस किसी भी प्रकार से विभाजन निरस्त होकर अखंड बने' यह महर्षि अरविंद की उत्कट इच्छा थी। अरविंद के संदेश को उद्धृत करते हुए डॉ.भागवत ने निम्नांकित पंक्तियों से अपना कथन समाप्त किया।

गांव गांव में सज्जन शक्ति रोम रोम में भारत भक्ति।
यही विजय का महामंत्र है दसों दिशा से करें प्रयाण।।

जय जय मेरे देश महान।
।। भारत माता की जय।।

वाल्मीकि समाज के साथ पूरी ताकत से खड़ा है संघ - भागवत

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने वाल्मीकि समाज से शिक्षित होने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि समाज को आगे बढ़ने के लिए संविधान निर्माता बाबा साहब अंबेडकर ने राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता संविधान में दी है। सामाजिक स्वतंत्रता के लिए द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने कार्य शुरू किया। वह आज भी अनवरत जारी है। वाल्मीकि समाज शिक्षा के जरिए जब योग्य बनेगा तभी उनको अधिकार मिल सकेंगे। समाज तरक्की कर सकेगा। इसके लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वाल्मीकि समाज के बीच लगातार पहुंच रहा है। सरसंघचालक मोहन भागवत 9 अक्टूबर को वाल्मीकि जयंती के अवसर पर कानपुर के फूलबाग में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने महर्षि वाल्मीकि के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि हिंदू समाज को वाल्मीकि समाज पर गर्व करना चाहिए क्योंकि भगवान राम को हिंदू समाज से परिचित कराने वाले भगवान वाल्मीकि ही थे। उन्होंने कहा कि रामायण न लिखी होती तो हमें राम भी न मिलते। भगवान वाल्मीकि के चलते देश में भगवान राम की पूजा होती है। सनातन धर्म में करुणा एक महत्वपूर्ण विषय है। कोई भी धर्म बिना करुणा के पूरा नहीं हो सकता। वाल्मीकि जयंती हमारे लिए राष्ट्रीय उत्सव है।

साथ ही उन्होंने कहा कि संघ की जितनी ताकत है, उस ताकत के साथ वाल्मीकि समाज के साथ खड़ा है। स्वयंसेवक आपके पास स्वयं आएंगे। आपको आने की जरूरत नहीं, हम आपको सशक्त बनाएंगे। स्वयंसेवकों को पता है कि पूरा हिंदू समाज हमारा है। ये समाज अपना है, भारतवर्ष अपना है, जो सदैव रहेगा।

संगठन गढ़े चलो – सुपंथ पर बढ़े चलो

विजयादशमी पर चहुंओर निकला स्वयंसेवकों का संचलन

श्री विजयादशमी उत्सव पर संघ की शाखाओं में शस्त्र पूजन होने के पश्चात् व्यायाम योग, दण्ड योग, दण्ड व नियुद्ध के प्रयोग, सूर्य नमस्कार आदि का प्रदर्शन किए जाने तथा पथ संचलन निकालने की परम्परा रही है।

इस विजयादशमी पर राजस्थान के लगभग सभी शहर-कस्बों यहां तक कि कई गांवों में भी स्वयंसेवकों ने स्थानीय मार्गों से पथ संचलन निकाल कर हिंदू समाज की एकता, समरसता, अभयता आदि का प्रदर्शन किया गया।

पाथेय कण को इस संबंध में प्राप्त समाचारों में से कुछ कार्यक्रम एवं पथ संचलन का विवरण आगे दिया जा रहा है।

जयपुर प्रांत

जयपुर- जयपुर महानगर में 28 स्थानों पर 29 पथ संचलन निकले। न्यू सांगानेर रोड के वीटी चौराहे और सीकर रोड स्थित रोड नं. 5 पर द्विधारा संगम ने उपस्थित जनसमुदाय को अभिभूत किया। एक कार्यक्रम में बोलते हुए संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख श्री स्वांत रंजन ने कहा कि विजयादशमी शक्ति की उपासना का दिन है। डॉ. हेडगेवार ने संघ की स्थापना समाज को शक्तिशाली बनाने के लिए की थी। **वीर तेजाजी नगर** में संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री निम्बाराम ने संबोधित करते हुए कहा कि धर्म की विजय और शक्ति का संदेश देने वाला आज का ये दिन है। **पौण्ड्रिक नगर** में संघ के क्षेत्र कार्यवाह श्री जसवंत खत्री ने संबोधित करते हुए कहा कि देश में किसी भी प्रकार की विपत्ति आई तब संघ का स्वयंसेवक सबसे आगे खड़ा मिला। **मानसरोवर** में बोलते हुए संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री महेन्द्र सिंघल का कहना था कि दुनिया में शांति स्थापित करनी है तो उसके लिए सज्जन लोगों का शक्ति सम्पन्न होना अति आवश्यक है। **विद्याधर नगर** में संघ के प्रांत प्रचारक डॉ. शैलेन्द्र ने इस अवसर पर कहा कि समाज की सज्जन शक्ति की निष्क्रियता से अनाचार की प्रवृत्ति हावी हो रही है। इसलिए निरंतर बढ़ रही राष्ट्र विरोधी और अवांछित गतिविधियों में लिप्त तत्वों पर अब समाज की प्रभावी सर्जिकल स्ट्राइक की जरूरत है।

सांगानेर- सांगानेर विभाग के पांच नगरों में पथ संचलन निकाले गए। आदर्श विद्या मंदिर प्रांगण में हुए सांगानेर नगर के कार्यक्रम को अ.भा.किसान संघ के अध्यक्ष श्री बद्रीनारायण चौधरी ने संबोधित किया। पथ संचलन में बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों ने सहभागिता की। प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. केपी सिंह मुख्य अतिथि रहे।

श्रीमाधोपुर (सीकर)- श्री प्रहलाद राय अग्रवाल आदर्श विद्या मंदिर से संचलन प्रारम्भ होकर मुख्य बाजारों से होता हुआ पुनः विद्यालय पर समापन हुआ। स्थान-स्थान पर नागरिकों द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विभाग के गोसेवा प्रमुख श्री लालचंद सैनी थोई थे। अध्यक्षता बड़ा रामदेव मंदिर के महंत द्वारकानाथ जी महाराज ने की।

देवली (टोंक)- शरद पूर्णिमा पर संघ के स्वयंसेवकों ने स्थानीय आदर्श बालिका विद्या मंदिर, पटेल नगर से पथ संचलन निकाला। चर्च रोड़ होते हुए संचलन पुनः विद्या मंदिर परिसर पहुँचकर विसर्जित हुआ।

मालपुरा (टोंक)- शरद पूर्णिमा (9अक्टूबर) पर मालपुरा के स्वयंसेवकों का संचलन कार्यक्रम महेश सेवा सदन में रखा था। संघ के प्रांत सह बौद्धिक प्रमुख श्री दिनेश मणिरत्नम ने संघ द्वारा किए जा रहे समाज व राष्ट्र कार्यों में सभी को अवगत कराया। आठ वाहिनियों में शामिल सभी स्वयंसेवक भगवान राम की भव्य झांकी के साथ जब मुख्य मार्गों से निकले तो भारत विकास परिषद सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों ने 51 स्वागत द्वारों पर उनका स्वागत किया। संचलन विभिन्न मार्गों से होते हुए महेश सेवा सदन पर सम्पन्न हुआ। संचलन में संघ के 500 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

चित्तौड़ प्रांत

ब्यावर (अजमेर)– कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चित्तौड़ प्रांत के सह प्रांत कार्यवाह श्री मुकेश कुमार ने इस अवसर पर कहा कि शास्त्रों की रक्षा शस्त्र से ही संभव हो पायी है। आज का दिन इस शक्ति की पूजा का ही दिन है।

चित्तौड़गढ़ – 800 स्वयंसेवकों ने कदम से कदम मिलाते हुए मुख्य मार्गों से संचलन निकाला। 75 मिनट में 5.50 किमी चले इस संचलन की भव्यता देखकर लोगों ने दांतों तले अंगुली दबा ली।

संचलन को अग्निवीर नाम दिया गया था। संचलन के पश्चात स्थानीय गणगौर गार्डन में कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संघ के क्षेत्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री हनुमान सिंह राठौड़ का कहना था कि समाज में अभय उत्पन्न करने के लिए पथ संचलन निकाला जाता है।

संचलन में 80-85 पार के बुजुर्ग स्वयंसेवकों के साथ-साथ बाल स्वयंसेवक भी बड़ी संख्या में कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे। संचलन का एक दर्जन से अधिक स्थानों पर पुष्प वर्षा कर तथा 6 स्थानों पर लाल कारपेट बिछाकर स्वागत-सत्कार किया गया।

चित्तौड़गढ़ के ही **गंगरार** कस्बे में भी संचलन निकाला गया जहां ग्रामीणों ने जगह-जगह तोरण द्वार बनाकर स्वागत किया। संचलन स्थानीय बाबा रामदेव मंदिर पहुँच कर सभा में परिवर्तित हुआ। चित्तौड़ प्रांत के सह शारीरिक प्रमुख श्री भारत भूषण ने उपस्थित स्वयंसेवक-कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया।

त्रिधारा संचलन

कोटा– कोटा में निकले 'विजय शक्ति संगम' में तीन स्थानों से एक साथ संचलन निकाला गया। तीनों संचलन को अलग-अलग नाम दिया गया था- केशव प्रवाह, माधव प्रवाह और मधुकर प्रवाह। तीनों के संगम स्थल को 'विजय शक्ति संगम' नाम दिया गया था। यहां से संचलन बृजराज गार्डन पहुंचा। संचलन का समाज के प्रबुद्धजनों, मातृ-शक्ति तथा सभी वर्गों द्वारा पुष्प वर्षा से स्वागत किया गया । बच्चे, बूढ़े और नौजवानों ने इस दौरान भारत माता की जय, वन्देमातरम् तथा जय श्रीराम का उद्घोष किया। कार्यक्रम को प्रांत के पर्यावरण संयोजक श्री कार्तिकेय नागर ने सम्बोधित किया। मुख्य अतिथि राजस्थानी भाषा एवं हाड़ौती के कवि दुर्गादान सिंह गौड थे।

निम्बाहेड़ा– सिंहनाद-2022 के तहत संचलन का प्रारम्भ कृषि उपज मंडी से शहर के मुख्य मार्गों से होता हुआ पुनः मंडी परिसर पर ही समापन हुआ। चित्तौड़ प्रांत के सह प्रांत प्रचारक श्री मुरलीधर ने कहा कि तथाकथित लोगों द्वारा यह भ्रांति फैलाई जा रही है कि संघ मुस्लिम, ईसाई, एससी व एसटी का विरोधी है जबकि संघ इनमें से किसी का विरोधी नहीं है।

अंता (बारां)– कृषि उपज मंडी से प्रारम्भ होकर अजीतपुरा, सीएडी तिराहे से सदर नाका, मेन बाजार, शिवाजी चौक से पुनः कृषि उपज मंडी पहुँचा। संचलन का पंजाबी समाज द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया।

बूंदी नगर का उत्सव नवल सागर पार्क में मनाया गया।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता चित्तौड़ प्रांत कार्यकारिणी के सदस्य डॉ.भालचन्द तेलंग थे। पथ संचलन का मार्ग में विभिन्न सामाजिक संगठनों, माता–बहनों द्वारा भारत माता का जयघोष लगाते हुए पुष्प वर्षा से स्वागत किया गया।

रामगंजमंडी(कोटा)– संचलन शहर के मुख्य मार्गों से होता हुआ पुनः मंडी परिसर में पहुँचा। विभाग कुटुम्ब प्रबोधन प्रमुख संतोष कुमार यादव ने सभी स्वयंसेवकों को पाथेय प्रदान किया।

उदयपुर– उदयपुर के नगर निगम प्रांगण में संघ स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए चित्तौड़ प्रांत के प्रांत प्रचारक श्री विजयानंद ने कहा कि समाज की सज्जन शक्ति देश की समस्याओं के समाधान के लिए देश को समय दे। हर व्यक्ति देश के लिए दो वर्ष का समय समर्पित करे। यदि संभव नहीं है तो नियमित कुछ समय देश व समाज के लिए अवश्य निकाले। संचलन में 14 घोष वाहिनियों सहित 56 वाहिनियां थीं।

संचलन का स्वरूप इतना विशाल था कि एक छोर घंटाघर पर था तो दूसरा छोर सूरजपोल चौराहे पर देखा जा सकता था। संचलन को देखने में एक स्थान पर सभी को लगभग 20 मिनट लगे।

भवानी मंडी (कोटा)– स्थानीय संस्कृत स्कूल से संचलन प्रारम्भ होकर मुख्य बाजारों से होकर पुनः स्कूल परिसर में पहुँचा। संघ के बारां विभाग प्रचारक श्री हेमेंद्र ने स्वयंसेवकों से भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर एकजुटता से इस कार्य में लगने का आह्वान किया। उन्होंने पर्यावरण, जल संरक्षण, पक्षी संरक्षण पर भी जोर दिया।

अजमेर– शहर में पहली बार 11 क्षेत्रों में अलग–अलग पथ संचलन निकले। केशव नगर, दीनदयाल नगर, वीर सावरकर, दाहरसेन, चाणक्य, विवेकानन्द, माधव, मधुकर तथा सुभाष चन्द्र बोस नगर के संचलन प्रातः 8.30 बजे निकले वहीं पृथ्वीराज चौहान नगर का संचलन शाम को निकाला गया। संचलन के दौरान खुली जीप में सवार देश की महान विभूतियों के चित्रों पर पुष्प वर्षा की गई।

बारां– शरद पूर्णिमा (9अक्टूबर) और वाल्मीकि जयंती के अवसर पर संघ के स्वयंसेवकों ने पथ संचलन थोक फल मंडी से निकाला। कार्यक्रम में चित्तौड़ प्रांत के बौद्धिक शिक्षण प्रमुख श्री सत्यनारायण कुमावत ने सम्बोधित किया।

छबड़ा (बारां)– संकल्प–2022 नाम से शरद पूर्णिमा पर निकले पथ संचलन में दो हजार से अधिक स्वयंसेवकों ने कदम से कदम मिलाकर सहभाग किया। कार्यक्रम स्थानीय सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल, खेल मैदान पर रखा गया था। जहां संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने संघ के गौरवशाली इतिहास–देशभक्ति की प्रेरणा से स्वयंसेवकों को अवगत कराया। संचलन का श्री काशी विश्वनाथ मठ महादेव मंदिर समिति सहित धार्मिक, सामाजिक संगठनों द्वारा तोरण द्वार बनाकर फूलों से स्वागत किया गया।

जोधपुर प्रांत

श्रीगंगानगर– सेठ गिरधारी लाल बिहाणी महाविद्यालय में विजयादशमी का मुख्य कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रांत प्रचारक श्री योगेन्द्र कुमार और संघचालक श्री अनिल जैन मंचासीन थे।

ओसियां– नगर में प्रताप शाखा नयापुरा से 8 शाखाओं के स्वयंसेवकों ने घोष वादन के साथ संचलन निकाला। बस स्टैण्ड, माताजी मंदिर होते हुए आदर्श विद्या मंदिर पर संचलन का समापन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता जोधपुर प्रांत के घोष प्रमुख श्री विक्रम वर्मा थे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा थे।

नोखा (बीकानेर)– नगर में स्थानीय भट्टड़ स्कूल के खेल मैदान में मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में संत रामाचार्य जी महाराज ने कहा कि हम दिन चार रहे या नहीं रहें, लेकिन भारत भूमि का वैभव अमर रहना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रांत प्रचार प्रमुख श्री पंकज कुमार ने कहा कि सात्विक शक्ति के प्रदर्शन से समाज का हित सोचने वाली सज्जन शक्ति में साहस व आत्मविश्वास बढ़ता है। संचलन का राष्ट्र सेविका समिति, दुर्गा वाहिनी, भाजपा की महिला मोर्चा की मातृशक्ति तथा विद्या भारती की बहनों ने रंगोली सजाकर स्वागत किया।

देशनोक (बीकानेर) नगर के विजयादशमी उत्सव में राजस्थान क्षेत्र के धर्म जागरण समन्वय विभाग के श्री ललित कुमार शर्मा ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैलाश दान देपावत थे।

बीकानेर – शहर की सात नगर इकाइयों ने एक ही समय पर शस्त्र पूजन कर पथ संचलन निकाला। बजरंग नगर में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए संघ के अखिल भारतीय घुमंतू कार्य प्रमुख श्री दुर्गादास ने कहा कि संघ सज्जन शक्ति के संगठन को प्रतिबद्ध हैं। शक्ति से ही शांति स्थापित होती है। हम सभी के जीवन में अंतिम समय तक राष्ट्र सर्वोपरि हैं, यही भाव रहना चाहिए। पहले देश–फिर शेष।

भीलवाड़ा – महानगर का संचलन चित्रकूट धाम से प्रारंभ हुआ। संचलन का नगरवासियों ने पुष्प एवं इत्र वर्षा कर स्वागत किया। कार्यकर्ताओं को महामंडलेश्वर पूज्य हंसराम उदासीन, पूज्य मायाराम, कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर, पूज्य महंत बाबू गिरी जी सहित अनेक संतों का आशीर्वचन मिला। संचलन में 14 घोष दल शहरवासियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। संचलन के साथ भारत माता तथा स्वराज–75 की झांकी भी चल रही थी।

सादुलशहर (श्रीगंगानगर) शहर का मुख्य कार्यक्रम शिव वाटिका में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में पंजाब धर्मजागरण संयोजक सरदार गुरुवचन मोखा ने सम्बोधित किया। उन्होंने सामाजिक समरसता, धर्मांतरण जैसे ज्वलंत विषयों पर अपने विचार रखे।

इसी प्रकार से आसींद, रायपुर, भीनमाल आदि कई स्थानों पर संचलन के कार्यक्रम होने के समाचार मिले हैं। ●

सरकार्यवाह जी का राजस्थान प्रवास

वैचारिक एवं बौद्धिक उपनिवेश से मुक्त होना होगा - होसबाले

वाल्मीकि जयंती पर अजमेर में उनके चित्र को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए सरकार्यवाह जी

अजमेर

संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले पिछले दिनों राजस्थान के प्रवास पर थे। उन्होंने अजमेर में आयोजित प्रबुद्धजन सम्मेलन में बोलते हुए कहा कि भारत स्वाधीन तो हुआ है, किंतु हमें 'स्व–तंत्र' विकसित करना होगा। भारत को सिर्फ राजनैतिक दृष्टि से स्वाधीनता नहीं चाहिए, हमें वैचारिक व बौद्धिक उपनिवेश से मुक्त होना होगा।

उन्होंने प्रशासन व्यवस्था, न्याय प्रणाली, शिक्षा पद्धति, अर्थ व्यवस्था सहित समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय विचार व दृष्टि पर आधारित व्यवस्था स्थापित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भारत को श्रेष्ठ बनाने का दायित्व सिर्फ सरकार का नहीं है, भारत को 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' बनाने हेतु हम सभी को अपनी भूमिका निभानी होगी।

पाली

9 अक्टूबर को पाली में आयोजित एक बड़े कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने राष्ट्र से प्रेम करने, जातिवाद का भेद मिटाने और राष्ट्र को शक्तिशाली व समृद्ध बनाने में हर नागरिक को योगदान देने की बात कही। श्री होसबाले ने कार्यक्रम के प्रारंभ में भगवान वाल्मीकि के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। उन्होंने कहा– देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।

जयपुर

मातृशक्ति ने शस्त्र पूजन कर निकाला पथ संचलन

चौगान स्टेडियम (जयपुर प्रांत)–राष्ट्र सेविका समिति का जयपुर, अलवर और भरतपुर विभाग का विजयादशमी उत्सव बीती 8 अक्टूबर को जयपुर के चौगान स्टेडियम में मनाया गया। इस अवसर पर सेविकाओं द्वारा पथ संचलन निकाला गया। संचलन चौगान स्टेडियम से प्रारंभ होकर शहर के मुख्य बाजारों से होता हुआ पुनः स्टेडियम पर ही विसर्जित हुआ। मातृशक्ति को संबोधित करते हुए सेविका समिति की प्रांत सह तरूणी प्रमुख डॉ. मधु शर्मा ने कहा कि नारी शक्ति को संगठित करके साथ चलना है। पथ संचलन अनुशासन व एकता को प्रदर्शित करता है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. अर्चना सक्सेना थी तथा स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रंजना जैन ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में कार्यक्रम को देखने स्थानीय गणमान्य जन उपस्थित थे।

मानसरोवर (जयपुर प्रांत)– राष्ट्र सेविका समिति तथा विश्व हिंदू परिषद की दुर्गा वाहिनी द्वारा देश भर में विजयादशमी पर 'शस्त्र पूजन' कार्यक्रम के माध्यम से शक्ति की आराधना करते हुए समाज को जाग्रत होने का संदेश दिया। जयपुर के मानसरोवर स्थित थड़ी मार्केट में दुर्गा वाहिनी द्वारा आयोजित शस्त्र-पूजा कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मातृ-शक्ति ने पूजन किया। शस्त्र पूजन के साथ-साथ ओंकार मंत्र, एकात्मता मंत्र, विजय मंत्र और दुर्गा चालीसा का पाठ भी किया। कार्यक्रम में श्री शक्ति पीठ की साध्वी माँ समदर्शी तथा विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री विनायक राव देशपांडे सहित विहिप के कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

सुजानगढ़ (जयपुर प्रांत)– सूरज कुमारी गाड़ोदिया विद्यालय में समिति का विजयादशमी उत्सव मनाया गया। समिति की राजस्थान क्षेत्र कार्यवाहिका प्रमिला शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में मातृ-शक्ति को संबोधित करते हुए उन्हें शक्ति का रूप बताया। मन,वचन, कर्म से परिवार, समाज और राष्ट्र की सेवा का संकल्प भी उन्होंने मातृ-शक्ति को दिलाया। इसके पश्चात् विद्यालय प्रांगण से सेविकाओं का पथ संचलन प्रारंभ हुआ जो शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए लुहारा गाड़ा बगीची शाखा पहुंचकर सम्पन्न हुआ। संचलन का स्थान-स्थान पर स्थानीय निवासियों द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। समिति की 200 से अधिक बहनों ने कदम से कदम मिलाकर संगठन शक्ति व संकल्प शक्ति का परिचय दिया।

तलवार और दण्ड का अद्भुत शौर्य प्रदर्शन

पाली(जोधपुर प्रांत)– दुर्गा वाहिनी की ओर से विजयादशमी पर मातृशक्ति ने शौर्य प्रदर्शन किया। इन्द्रा कॉलोनी से गाजे-बाजे के साथ श्वेत वस्त्र पहने व भगवा ध्वज लहराते शौर्य यात्रा प्रारंभ हुई। यात्रा के दौरान मातृ-शक्ति ने शिवाजी सर्किल पर हवा में तलवारें व दण्ड (लाठी) चलाया तो दर्शक बने समाज को दांतों तले अंगुली दबाने को विवश होना पड़ा। शौर्य यात्रा अम्बेडकर सर्किल होते हुए रतनेश्वर महादेव मंदिर पहुँचकर सम्पन्न हुई। यात्रा मार्ग में शहरवासियों ने फूल बरसाकर स्वागत किया। महिषासुरमर्दिनी की दिव्य और भव्य झांकी यात्रा के कौतुहल का विषय रही। कार्यक्रम को मातृशक्ति की केन्द्रीय संयोजिका अभिलाषा जी ने संबोधित किया। ●

सुजानगढ़

पाली

सोशल मीडिया का सार्थक उपयोग

राजस्थान के शिक्षकों की अभिनव पहल

स्वयंप्रेरणा से दे रहे हैं नारी सम्मान के संस्कार

इन कार्यक्रमों में कन्या के पैरों का मैल ही नहीं धुलता, पैर धोने वाले के मन का मैल भी साफ हो जाता है

1 से 5 तक की कक्षा में पढ़ने वाली छात्राओं का नवरात्रों के दौरान विद्यालय में ही सार्वजनिक रूप से उनके पैर धोकर उनका पूजन करने और उन्हें भोजन कराने के कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों व अन्य लोगों को संस्कारित करने का अनूठा कार्यक्रम पिछले आठ वर्षों से चल रहा है।

वर्ष 2019 में राजस्थान के सभी सरकारी 33 जिलों के 15 सौ से अधिक विद्यालयों में यह आयोजन हुए। इनमें 22 हजार 200 शिक्षकों तथा 2 लाख 25 हजार छात्रों ने मिलकर कक्षा एक से पांच तक की 45 हजार छात्राओं का पूजन कर जीवन पर्यन्त नारी सम्मान तथा लैंगिक व जातीय भेदभाव से मुक्ति का संकल्प लिया। कोरोना काल में जब विद्यालय बंद थे तो यह अभियान 'मोहल्ले की बेटियां' नाम से संचालित किया गया।

आयोजकों का मानना है कि छात्र जीवन से नारी सम्मान का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जाए तो बड़े होकर अपने जीवन में अनैतिक आचरण से बचे रहेंगे।

अभियान का संचालन करने के लिए व्हाट्सएप पर 12 समूह संभाग/जिला अनुसार बनाए गए हैं। मॉनिटरिंग के लिए एक नोडल व्हाट्सएप ग्रुप भी बनाया है जिसमें राज्य के विभिन्न जिलों के शिक्षक, शिक्षाविद्, शिक्षा अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, पत्रकार एवं साहित्यकार जुड़े हुए हैं।

जालोर से इस अभियान को प्रारंभ करने वाले शिक्षक श्री संदीप जोशी ने बताया कि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास से प्रेरणा लेकर यह कार्यक्रम शुरू किया गया था।

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल, भारतीय प्रशासनिक सेवा के श्री जितेन्द्र सोनी, राज.के प्रशासनिक अधिकारी श्री प्रकाश अग्रवाल, वरिष्ठ शिक्षाविद् श्री अतुल भाई कोठारी सहित कई गणमान्य लोग इस अभियान की सराहना कर चुके हैं।

कन्या पूजन कार्यक्रम में कन्या के पैरों का मैल ही नहीं धुलता, बल्कि पैर धोने वाले के मन का मैल भी साफ होता है तथा जातीय भेदभाव के स्थान पर सामाजिक समरसता का भाव जागृत होता है।

यह कार्यक्रम अपना विस्तार लेते हुए अब भारत के पांच राज्यों में संचालित हो रहा है तथा पहली बार भारत के बाहर अमेरिका के शिकागो शहर में ऐसा ही एक कन्या पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सिरोही

वंचित वर्ग की 201 कन्याओं का पूजन

राष्ट्र सेविका समिति तथा सेवा भारती द्वारा 2 अक्टूबर को वंचित वर्ग की शक्ति स्वरूपा मां दुर्गा की ही प्रतिमूर्ति 201 कन्याओं का पूजन किया गया। सेवा भारती के प्रांत मंत्री श्री चंपत मिस्त्री ने इस अवसर पर सामाजिक समरसता के साथ ही सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करने पर जोर दिया। राष्ट्र सेविका समिति की कार्यकर्ता चित्रलेखा ने नारी शक्ति को संगठित, सशक्त व स्वाभिमानी बनने पर जोर दिया।

गुजरात

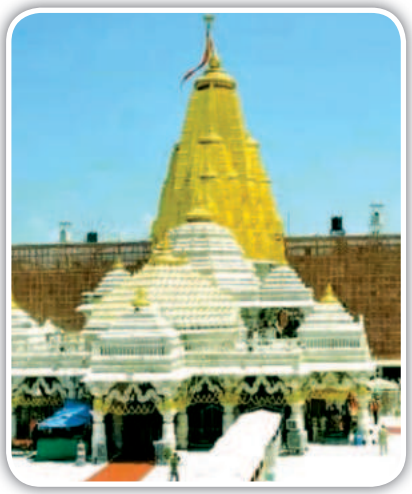

वनवासी बेटियों के पूजन के साथ आरंभ हुआ अंबाजी का लोकमेला

गुजरात स्थित अंबाजी शक्तिपीठ पर भादों माह में लगने वाला लोकमेला इस बार वनवासी कन्याओं के पूजन के साथ आरंभ हुआ। यह देश के 51 शक्तिपीठों में से एक है। मान्यता है कि यहां देवी सती का हृदय गिरा था। यहां देवी की कोई प्रतिमा नहीं है। मंदिर में बने हुए श्रीचक्र की ही भक्तगण पूजा करते हैं। गुजरात-राजस्थान की सीमा पर स्थित यह शक्तिपीठ माउंट आबू से मात्र 45 किमी दूरी पर है।

जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों पर सेमिनार व प्रदर्शनी

'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के जनजातीय नायक' विषय पर देश के सुदूर हिस्से अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में सेमिनार और प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इन द्वीपों में कृषि अनुसंधान के लिए बने संस्थान (ICAR-CIARI) के निदेशक डॉ. एकनाथ बी. चाकुरकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने आम लोगों तक इन अनाम जनजातीय स्वाधीनता सेनानियों की जानकारी पहुंचाने की बात कही।

जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. हेमंत कुमार शर्मा, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष केएपीएस श्री अभिनव प्रकाश, पोर्ट ब्लेयर में भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के विभागाध्यक्ष डॉ. निलंजन खटुआ, पोर्ट ब्लेयर स्थित वनवासी कल्याण आश्रम की संयुक्त सचिव श्रीमती सम्पत्ति खल्खो, प्रचार-प्रसार प्रमुख श्री रामकुमार सिंह, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के पूर्व प्रमुख डॉ.ए जस्टिन, अंग्रेजी की विभागाध्यक्ष सुश्री जोचिबेड विनसेट ने भी संगोष्ठी में अपने विचार व्यक्त किए। अतिथियों ने बिरसा मुंडा, तांतिया मामा, भीमा नायक, तिलका मांझी, काली बाई आदि सहित अनाम जनजातीय नायकों के योगदान पर चर्चा की तथा आम लोगों, विशेषकर नई पीढ़ी यानि युवाओं को इस हेतु प्रेरित किए जाने की बात कही।

इस अवसर पर स्वतंत्रता के लिए जनजातीय समुदाय के योगदान पर आधारित 'वनबंधु' नामक विशेष संस्कारित पत्रिका का विमोचन किया गया। एनईईटी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली 'ग्रेट अंडमानी जनजाति' की छात्रा सुश्री टेचा को सम्मानित भी किया गया। डॉ. मंजू नायर ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

जब मिले जनजाति-संन्यासी

अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में कार्यरत वनवासी कल्याण आश्रम के प्रांत प्रचार-प्रसार प्रमुख श्री रामकुमार सिंह ने बताया- ''पोर्ट ब्लेयर स्थित श्री रामकृष्ण मिशन में गया था। संध्या आरती में शामिल हुआ। वहां हमें उरांव जनजाति के एक संन्यासी मिले। उनसे बातें हुई। एक आदिवासी-जनजाति परिवार का व्यक्ति भी हिन्दू संन्यासी बन सकता है, यह जानकर अतीव, प्रसन्नता और आनंद का अनुभव हुआ।''

'स्मृतियों में अशोक काम्बोज' पुस्तक का विमोचन

वर्षों तक सीकर, झुन्झुनू और जयपुर महानगर में संघ के प्रचारक रहते हुए स्व.अशोक काम्बोज ने समाज और राष्ट्र के लिए बड़ी जीवटता, लगन और निष्ठा से कार्य किया था। ऐसे ध्येयनिष्ठ अशोक जी का पुण्य स्मरण उनके साथ काम करने वाले संघ के कार्यकर्ताओं तथा समाज बंधुओं ने बीती 1 अक्टूबर को किया। अवसर था उनके जीवन और उनकी रचनाधर्मिता को समेटे उनके बारे में प्रकाशित की गई पुस्तक 'स्मृतियों में अशोक काम्बोज' पुस्तक के विमोचन का।

जयपुर के होटल ललित में हुए इस कार्यक्रम में संघ के अ.भा.कार्यकारिणी के सदस्य श्री इन्द्रेश कुमार ने स्व.अशोक जी का स्मरण करते हुए प्रचारक जीवन पर जहां प्रकाश डाला, वहीं भाजपा राजस्थान के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व राज्यसभा सदस्य डॉ.महेश चन्द्र शर्मा तथा अ.भा.किसान संघ के सह संगठन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह ने अशोक जी के साथ हुए अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने बताया कि अशोक जी गजब के साहसी, बलशाली और युवकों को साथ लेते हुए मस्ती के साथ राष्ट्र कार्य करने वाले कार्यकर्ता थे।

संघ के अ.भा.बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वांत रंजन तथा राजसमंद से सांसद व जयपुर राजघराने की राजकुमारी दीया कुमारी जी ने भी अपने विचार प्रकट किए। स्व.अशोक जी काम्बोज के पुत्र श्री मनु काम्बोज ने आभार व्यक्त किया।

जयपुर

क्रीड़ा भारती के खेल केन्द्रों में तराशे जाते हैं खिलाड़ी

मालवीय नगर में प्रारंभ हुआ एक नया केन्द्र

क्रीड़ा भारती संस्था का मुख्य कार्य प्रतिभावान खिलाड़ियों को तराशना व उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना है। यह बताते हुए राजस्थान के संयोजक मेघसिंह चौहान ने कहा कि खेल प्रतियोगिता में हिस्सा न लेने वालों को भी सामान्य खेल खिलाकर शारीरिक रूप से मजबूत बनाने का कार्य क्रीड़ा भारती के खेल केन्द्र करते हैं। इन खेल केन्द्रों से कई उत्कृष्ट कबड्डी खिलाड़ी निकले हैं जिन्होंने पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया है। ऐसा ही एक खेल केन्द्र जयपुर के मालवीय नगर में गत 4 अक्टूबर को खोला गया है जहां कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल, वालीबॉल, बैडमिंटन, शूटिंगबॉल जैसे खेलों के लिए योग्य प्रशिक्षकों तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को नियुक्त किया जाएगा। खिलाड़ियों को अच्छी डाइट (खाना) व खेल सामग्री भी खेल केन्द्र द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी।

अयोध्या कारसेवा के बलिदानियों का पुण्य स्मरण

● संजय सुरोलिया

भारतीय राष्ट्र के पुनर्जागरण की प्रक्रिया सुदीर्घ काल से चलती आई है। ब्रिटिश शासन के दौरान स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविन्द, वीर सावरकर आदि अन्यान्य महापुरुषों ने केवल अंग्रेजों की सत्ता हटा देने को ही अंतिम लक्ष्य नहीं माना वरन् भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों के अधिष्ठान पर राष्ट्र को प्रतिष्ठित करते हुए परम वैभवशाली और विश्वगुरू भारत बनाने की दिशा में कार्य किया। कुछ अन्य भारतीय नेता सीमित व संकुचित दृष्टि रखते हुये भी कार्य कर रहे थे। राष्ट्रीय आंदोलन की ये दो विचार धारायें स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात् सोमनाथ मंदिर के पुनरोद्धार के विषय पर मतभेद के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। श्रद्धा और आस्था के ये केन्द्र केवल मूर्ति पूजा के स्थान नहीं हैं अपितु राष्ट्रीय गौरव और प्रेरणा के केन्द्र हैं। सोमनाथ मंदिर की भांति अयोध्या में भारतीय जीवन मूल्यों के प्रतिनिधि नायक प्रभु श्रीराम की जन्म स्थली पर अनाचार, अत्याचार और अन्याय की प्रतीक तथाकथित मस्जिद के विवादास्पद ढांचे के स्थान पर भव्य मंदिर के निर्माण का संकल्प विश्व हिंदू परिषद ने सब संत-महात्माओं से विमर्श करते हुए निश्चित किया था।

जनजागरण और आंदोलन

1528 में मुगल आक्रांता बाबर के सेनापति मीरबांकी ने श्री रामजन्मभूमि पर बने मंदिर में तोड़ फोड़ कर, उसका रूप परिवर्तित करते हुए मस्जिद बना दी थी। उसके बाद सैकड़ों वर्षों तक श्रीरामजन्मभूमि उद्धार के लिए युद्ध और संघर्ष की शृंखला चलती रही। इस संघर्ष में उपलब्ध ऐतिहासिक उल्लेखों के अनुसार लाखों हिन्दू वीरों का 'जीवन' बलिदान हुआ।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् एक बार फिर विवादित ढांचे के स्थान पर भव्य राममंदिर बनाने हेतु प्रयत्न प्रारंभ हुए। न्यायालय में भी वाद प्रस्तुत किया गया, परंतु मंदिर के पुनर्निर्माण हेतु एक प्रबल जनचेतना जागरण और संगठित लोक शक्ति का प्रकटीकरण आवश्यक था।

1983 के एकात्मता यज्ञ के अंतर्गत रथ यात्राएं, 1984 की धर्म संसद का प्रस्ताव, 1984 में ही राम-जानकी रथ यात्रा, 1989 में देश के तीन लाख गांव-शहरों में राम शिला पूजन तथा 1990 में दीपावली से पूर्व राम ज्योति सप्ताह जन जागरण की दिशा में मील के पत्थर सिद्ध हुए।

कारसेवा

30 अक्टूबर, 1990 से अयोध्या में भव्य मंदिर निर्माण हेतु कारसेवा प्रारंभ किए जाने की घोषणा की गई। इसके लिए देशभर से लाखों कारसेवकों ने वहाँ पहुँचने का निश्चय किया।

शासन द्वारा कारसेवा को रोकने के लिए कई तरह के षड्यंत्र किए गए। उत्तर-प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा तो अयोध्या में परिंदे तक के प्रवेश नहीं होने देने की घोषणा की गई। लेकिन सम्पूर्ण देश से समर्पित-संकल्पित बलिदानी कारसेवक अपने-अपने घर-गाँव से अयोध्या के लिए निकल पड़े। जय श्रीराम का उद्घोष राष्ट्र की नव चेतना के घोष वाक्य के रूप में चहुँओर गुंजायमान था। राज्य सरकार ने भीषण दमनकारी नीति अपनाते हुए राज्य में प्रवेश करने वाले कारसेवकों को गिरफ्तार कर कारावास में ठूंसने का उपक्रम किया। कारावास में भी अनेक स्थानों पर कारसेवकों पर अमानुषिक अत्याचार किए गए ताकि उस क्रूरता के समाचारों से घबराकर कारसेवक यात्रा पर नहीं निकलें।

किंतु सभी तरह की पहरेदारियों और निरंकुश अत्याचारों के उपरान्त भी कारसेवा के लिए निर्धारित तिथि देवोत्थान एकादशी, 30 अक्टूबर, 1990 को हजारों कारसेवक अयोध्या की सड़कों पर उपस्थित थे। प्रमुख साधु-संतों के नेतृत्व में कारसेवकों का यह समूह कारसेवा हेतु श्रीरामजन्म भूमि की ओर बढ़ा। सरकार ने कारसेवा स्थल के चारों ओर हजारों पुलिस कार्मिकों को नियुक्त किया था। साथ ही विद्युत धारा युक्त कांटेदार 'धातु तारों' का सुरक्षा चक्र भी बनाया गया था। किन्तु ये सब सुरक्षा उपाय कारसेवकों के अदम्य संकल्प के सम्मुख धराशायी हो गए। सभी बाधाओं को पार करते हुए कारसेवक जन्मभूमि पहुँच गए और पुराने ढाँचे को हटाने हेतु प्रतीक रूप से 30 अक्टूबर को कारसेवा सफल रही।

पुलिस ने इस दौरान निहत्थे-अहिंसक लेकिन राम काज हेतु जीवन बलिदानी कारसेवकों पर गोलियों चलाई जिससे कम से कम पाँच कारसेवकों ने अपने प्राण बलिदान किए। किन्तु राष्ट्रीय चेतना का शाश्वत प्रतीक भगवा ध्वज, जो कि इस दिन श्रीराम मंदिर पर फहरा रहा था, गौरव और विजय का शंखनाद कर रहा था। अगले दिन देशभर के समाचार पत्रों में मुद्रित उस चित्र ने करोड़ों देशभक्तों का मस्तक गर्व से उन्नत कर दिया।

कारसेवकों की इस सफलता ने मुस्लिम वोट बैंक पर विकसित सत्ताधारियों के नेतृत्व को अंदर तक हिला दिया था। उन्हें अपना प्राणप्रिय वोट बैंक खतरे में जाता दिखाई दे रहा था।

विश्व हिंदू परिषद और साधु संतों ने 2 नवम्बर को पुनः कारसेवा हेतु श्री रामजन्मभूमि की ओर कारसेवकों के सामूहिक प्रस्थान का कार्यक्रम निर्धारित किया। शासन और प्रशासन भी क्रूरता और अत्याचार की सीमा लांघने का निश्चय किए बैठा था। श्रीरामजन्मभूमि की ओर बढ़ते शांतिपूर्ण, अहिंसक कारसेवकों पर लाठी, गोली, आंसू गैस के गोलों की वर्षा प्रारंभ कर दी गई।

निशाना बांध कर कारसेवकों पर गोलियाँ चलाई गई। गली के घरों में से कारसेवकों को निकाल-निकाल कर गोलियाँ मारी गई। अयोध्या की गलियाँ कारसेवकों के रक्त से लाल हो गई। प्रशासन और पुलिस के कतिपय अधिकारियों ने कुख्यात जनरल डायर की नृशंसता से होड़ लगाई। सैंकड़ों कारसेवक हताहत हुए, लेकिन उत्साह से संकल्प पर डटे रहे। भ्रातद्वय रामकुमार कोठारी और शरद कोठारी, प्रो. महेन्द्रनाथ अरोड़ा, सेठाराम माली और अन्यान्य कारसेवकों का जीवन बलिदान हुआ। जयपुर से कारसेवा हेतु गए श्री रामावतार सिंहल गोलीबारी के दौरान साथी कारसेवकों की जल सेवा करते हुए अंतिम बार देखे गए थे किंतु 2 नवम्बर की दोपहर पश्चात् से आज तक उनका कोई पता नहीं चल सका।

1992 में हुई द्वितीय कारसेवा के अंतर्गत विवादित ढांचा टूटने तथा बाद में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा राममंदिर निर्माण के पक्ष में निर्णय दिए जाने से अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए 30 अक्टूबर एवं 2 नवम्बर को अपना बलिदान देकर अमर हो गए कारसेवकों का पुण्य स्मरण करना हम सबका पुनीत कर्तव्य है। ●

(लेखक उच्च माध्यमिक विद्यालय से सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य हैं)

बोध कथा

सच्ची तीर्थयात्रा

एक बार रामकृष्ण परमहंस अपने शिष्य मथुरा बाबू और परिवार के कुछ लोगों के साथ यात्रा पर थे। यात्रा क्रम में एक बार पूरी टोली देवघर में ठहरी। उन दिनों वह पूरा नगर तथा आसपास के गांव भयंकर अकाल की चपेट में थे। उनमें से कुछ लोग अनाज के अभाव में परलोक सिधार चुके थे।

दुर्बलता के कारण उन लोगों के शरीर पर केवल अस्थि ही नजर आ रही थी। उनके पास तन ढकने के लिए कपड़े भी नहीं थे। रामकृष्ण इस दृश्य को सहन नहीं कर सके। वह भी उनके बीच बैठकर उनका दुःख बांटने लगे और मथुरा बाबू से उनके कष्टों को दूर करने को कहा।

मथुरा बाबू बोले यहां तो बहुत सारे गरीब हैं, मैं इन सब लोगों की सहायता कैसे कर सकता हूँ? फिर हमें काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थों का खर्च भी तो ध्यान में रखना होगा।

श्री रामकृष्ण ने कहा– इन अकाल पीड़ित बंधुओं को इस हाल में छोड़कर मैं तीर्थयात्रा पर नहीं जा सकता। ये मां जगदम्बा की संतान हैं। मैं भी इनके साथ आमरण उपवास करूँगा। तुम्हारी तीर्थयात्रा की मैं बिल्कुल भी परवाह नहीं करता।

आखिरकार मथुरा बाबू को उन संथाल आदिवासियों के भोजन और कपड़ों की व्यवस्था करनी पड़ी जिसमें उन्होंने अपनी आगे की यात्रा का धन खर्च करना पड़ा। उसके बाद ही रामकृष्ण परमहंस आगे की यात्रा जारी रखने को सहमत हुए।

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -27)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9. ( )
10.( )

नाम .....

पिता का नाम.....

उम्र ..... पूर्ण पता .....

.....

.....पिन.....

मोबाइल नं. .....

बाल प्रश्नोत्तरी -27

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 1 अक्टूबर का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल–किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि – 5 नवम्बर, 2022**

1. **इतिहास प्रसिद्ध दिवेर युद्ध कब लड़ा गया था?**
(क)16 सित., 1583 (ख) 16 सित.,1580 (ग) 16 सित.,1570 (घ) 16 सित.,1585

2. **'दिवेर विजय स्थली' स्मारक कब बनाया गया था?**
(क) 2010 (ख) 2012 (ग) 2015 (घ) 2018

3. **महाराणा प्रताप ने किस मुगल सेनानायक को अपने हाथों से गंगाजल पिलाया था?**
(क) आसफ खान (ख) शाह आलम (ग) सुल्तान खां (घ) अली जौहर

4. **भारतीय साहित्य जगत में पृथ्वीराज राठौड़ किस नाम से विख्यात है?**
(क) बादल (ख) चारण (ग) पाथल (घ) पीथल

5. **घोड़े सहित मुगल सरदार को अपने भाले से बींधने वाला मेवाड़ी वीर कौन था?**
(क) अमर सिंह (ख) दुर्जन सिंह (ग) भाल सिंह (घ) रामसिंह

6. **लोकमंथन–2022 का तीसरा संस्करण असम में कहां आयोजित हुआ?**
(क) गोवाहाटी (ख) डिब्रूगढ़ (ग) लखीमपुर (घ) बारपेटा

7. **सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती कब मनाई जाती है?**
(क) 30 अक्टूबर (ख) 29 अक्टूबर (ग) 28 अक्टूबर (घ) 31 अक्टूबर

8. **काकोरी काण्ड में गिरफ्तार अशफाक उल्ला खां को किस जगह फांसी दी गई?**
(क) फिरोजाबाद (ख) फैजाबाद (ग) मुरादाबाद (घ) गाजियाबाद

9. **मेजर दलपत सिंह शेखावत इजरायल में किस नाम से जाने जाते हैं?**
(क) परमवीर (ख) केसर सिंह (ग) हाइफा–हीरो (घ) केसर–ए–हिंद

10. **विश्व प्रसिद्ध बिसाऊ की मूक रामलीला राजस्थान के किस जिले में प्रतिवर्ष आयोजित होती है।**
(क) झुंझुनूं (ख) जोधपुर (ग) बीकानेर (घ) जयपुर

बाल प्रश्नोत्तरी -24 के परिणाम

रेणु जयेश भूपेन्द्र फती भव्य

1. रेणु मीणा, मालपुरा, टोंक
2. जयेश राकांवत, ब्रह्मपुरी, नागौर
3. भूपेन्द्र सिंह, आदर्श नगर, अजमेर
4. फती, आहोर, जालोर
5. भव्य श्रीमाल, जहाजपुर, भीलवाड़ा
6. पूर्वांश गुप्ता, मालपुरा, टोंक
7. निखिल गौतम, निवाई, टोंक
8. हरीश, बिरानी, श्रीगंगानगर
9. प्रताप, रामसर, बाड़मेर
10. ऋतुराज व्यास, मटून, उदयपुर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर 1.(क) 2.(क) 3.(क) 4.(क) 5.(क) 6.(क)7.(क) 8.(क) 9.(क)10.(क)

स्वं. संदीप सोमानी की स्मृति में हुआ एक नेक कार्य

अपने धन का कैसा उपयोग कर रहे हैं आप?

आप अपने धन का उपयोग क्या स्वयं और परिवार वालों के लिए ही कर रहे हैं? व्यक्ति बड़ी मेहनत से धन-संपत्ति जोड़ता है, परंतु बहुत से मामलों में देखा गया है कि व्यक्ति के जाने के बाद उसकी धन संपदा उसकी संतानों में कलह और मनमुटाव का माध्यम बन जाती है।

सीकर जिले के श्रीमाधोपुर में स्व.संदीप सोमानी की स्मृति में बीते दिनों एक शिविर लगाकर 57 दिव्यांगों को निःशुल्क उपकरण बांटने का कार्य हुआ। समझिए कि न केवल 57 व्यक्तियों का जीवन आसान हो गया वरन् 57 परिवारों का भविष्य सुधर गया। कितना अच्छा उपयोग किया गया है धन का।

इस अवसर पर बावड़ी आश्रम के श्रीमहंत ओंकारदास महाराज ने कहा कि पैसा तो सभी के पास होता है लेकिन उस पैसे को समाज के काम में जो लगाता है, वही मानव होता है। अपने लिए तो सभी जीते हैं, जो दूसरों की मदद को आगे आए वही नारायण सेवा होगी। संघ के क्षेत्रीय प्रौढ़ कार्य प्रमुख श्री कैलाश चंद्र ने कहा कि संदीप सोमानी जी की स्मृति में एक अच्छा कार्य किया गया है। इस कार्य में जो भी लगे हैं, वे सम्मान के पात्र हैं।

तत्कालीन विभाग प्रचारक श्री संजय कुमार की प्रेरणा से आरंभ इस सेवा ट्रस्ट के संरक्षक श्री प्रहलाद सोमानी ने बताया कि शिविर में 13 लोगों को ट्राईसाईकिल, 7 को व्हील चेयर, 13 को जयपुर फुट, 14 लोगों को केलिपर तथा शेष को बैसाखी वितरित की गई।

इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष, पूर्व विधायक, वर्तमान पार्षद सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

पाथेय कण के 'दिवेर विजय अंक' का विमोचन

जयपुर में 1 अक्टूबर को पाथेय कण के 'दिवेर विजय अंक' का विमोचन करते हुए श्री गजेन्द्र सिंह, श्री इन्द्रेश कुमार, श्री स्वांतरंजन एवं डॉ. महेश चन्द्र शर्मा। साथ में हैं पाथेय कण के माणक चन्द, रामस्वरूप एवं ओमप्रकाश

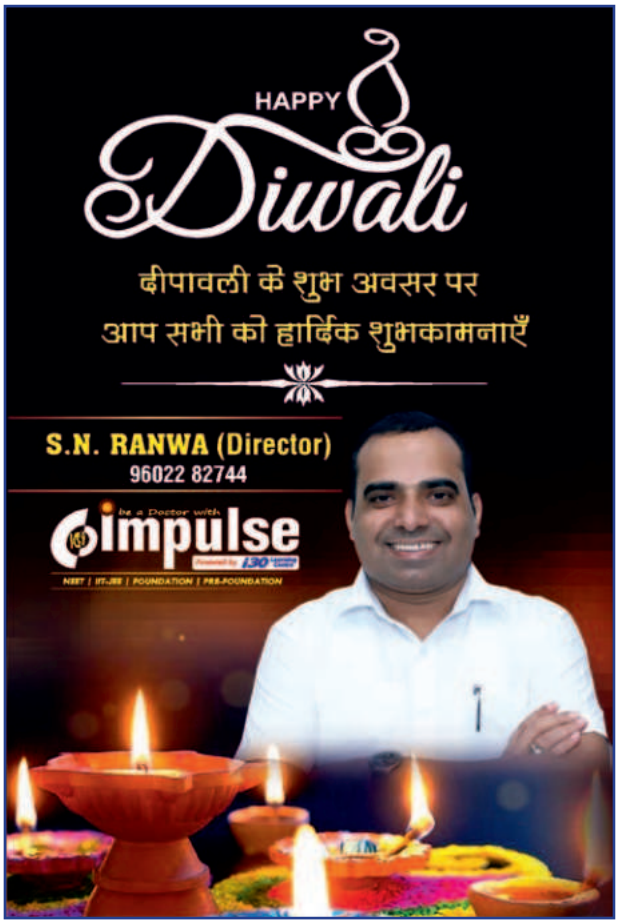

सूर्या

आत्मनिर्भर भारत की पहचान
लाइटिंग | अप्लायेंसेस
पंखे | स्टील और पीवीसी पाइप

इनोवेशन, क्वॉलिटी और
विश्वसनीयता हमारी पहचान।

सूर्या के प्रोडक्ट केवल पूरे भारत में ही उपलब्ध नहीं बल्कि पूरी दुनिया के 50 से अधिक देशों को निर्यात किए जाते हैं। कम्पनी सभी ग्राहकों की ज़िन्दगी रौशन करने तथा सभी से इनोवेशन, गुणवत्ता और विश्वसनीयता का वादा करती है।

सूर्या रोशनी लिमिटेड
ई–मेलः consumercare@surya.in | www.surya.co.in suryalighting surya_roshni
दूरभाषः +91–11–47108000, 25810093–96 | टोल फ्री नंबरः 1800 102 5657

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

32

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

सुभाष को 'आर्लेंडो मजोरा' के फर्जी नाम से सोवियत यूनियन के रास्ते कार से रवाना किया... 600 किलोमीटर की दुर्गम यात्रा के बाद समरकंद पहुँचे, जहां से रेल द्वारा मास्को के लिए रवाना हुए।

मास्को में जर्मन राजदूत से मिले... उनका बर्लिन जाने का कार्यक्रम पहले से ही तय था। 2 अप्रैल, 1921 को बर्लिन पहुँच गए।

जर्मनी सरकार ने उन्हें भारत के शीर्ष व लोकप्रिय नेता के रूप में स्वीकार किया। बर्लिन में 'फ्री इंडिया सेंटर' कार्यालय खोला गया यहीं से 'आजाद हिन्द रेडियो' प्रारंभ हुआ...जो भारतीय सैनिकों तक अपनी बात पहुँचाने का सशक्त माध्यम था...

सुभाष जी की आवाज सुनकर देशवासी भावुक हो गए।

पाक्षिक
पाथेय कण
16-31अक्टूबर, 2022
(11 अक्टूबर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष (1 से 15 नवम्बर, 2022) के विशेष अवसर
(कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष कृष्ण 7, वि.सं. 2079)

कार्तिक शु. 11(4 नवम्बर)- संत नामदेव जयंती (1270ई.)
कार्तिक शु. 12(5 नवम्बर)- महाकवि कालिदास जयंती
कार्तिक पूर्णिमा (8 नव.)- प्रथम गुरू नानक देव जी जयंती (1469)

जन्म दिवस

7 नवम्बर (1884) - डॉ.पांडुरंग सदाशिव खानखोजे जयंती
7 नवम्बर (1888) - वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकटरमण जयंती
7 नवम्बर (1912) - माधव राव मुले जयंती
7 नवम्बर (1858) - विपिन चन्द्र पाल जयंती
10 नवम्बर (1920) - दत्तोपंत ठेंगड़ी जयंती
13 नवम्बर (1780) - महाराजा रणजीत सिंह जयंती
13 नवम्बर (1904) - भोगीलाल पाण्ड्या जयंती
14 नवम्बर (1891) - वैज्ञानिक बीरबल साहनी जयंती
15 नवम्बर (1875) - बिरसा मुण्डा की जयंती (जनजातीय गौरव दिवस)

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

2 नवम्बर (1990) - अयोध्या में कारसेवकों का बलिदान
3 नवम्बर (1947) - प्रथम परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा का बलिदान
7 नवम्बर (1966) - दिल्ली में गोभक्तों का बलिदान
10 नवम्बर (1675) - भाई मतिदास, सतीदास, दयाला की शहादत
10 नवम्बर (1908) - कन्हाईलाल दत्त की शहादत
11 नवम्बर (1675) - धर्मरक्षा हेतु गुरु तेगबहादुर का बलिदान
12 नवम्बर (1946) - महामना मदनमोहन मालवीय की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

8 नवम्बर - पुष्कर मेला समाप्त
9 नवम्बर (2019) - श्रीराम जन्मभूमि विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का रामलला के पक्ष में ऐतिहासिक निर्णय
9 नवम्बर - राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस
10 नवम्बर (1659) - शिवाजी महाराज द्वारा अफजल खान का वध
14 नवम्बर - बाल दिवस
14 नवम्बर - विश्व मधुमेह दिवस

सांस्कृतिक पर्व

26 अक्टूबर- अन्नकूट पर्व,
27 अक्टूबर- भैयादूज,
1 नवम्बर- गोपाष्टमी
2 नवम्बर- आंवला नवमी

पंचांग- कार्तिक (शुक्ल-पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944
(26 अक्टूबर से 8 नवम्बर 2022)

गोवर्धन (अन्नकूट)-26 अक्टूबर, **भैया दूज(यम द्वितीया)**-27 अक्टूबर, **विनायक चतुर्थी**-28 अक्टूबर, **डाला छठ महापर्व प्रारंभ (बिहार)**-28 अक्टूबर, **गोपाष्टमी, अष्टानिका महापर्व प्रारंभ (जैन)**-1 नवम्बर, **आंवला नवमी**-2 नवम्बर, **पंचक प्रारम्भ**-2 नवम्बर (दोपहर 2.16 बजे), **देवउठनी एकादशी व्रत**-4 नवम्बर, **शनि प्रदोष व्रत**-5 नवम्बर, (चातुर्मास समाप्त), **पंचक समाप्त**-6 नवम्बर (रात्रि 12.04 बजे), **पूर्णिमा व्रत**-7 नवम्बर, **सत्यनारायण व्रत**-8 नवम्बर, **चन्द्रग्रहण** -8 नवम्बर, **पुष्कर मेला समाप्त** (अजमेर)- 8 नवम्बर

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 26-27 अक्टूबर **तुला** राशि में, 28-29 अक्टूबर नीच की राशि **वृश्चिक** में, 30-31 अक्टूबर **धनु** राशि में, 1-2 नवम्बर **मकर** राशि में, 3-4 नवम्बर **कुंभ** राशि में, 5-6 नवम्बर **मीन** राशि में तथा 7-8 नवम्बर **मेष** राशि में गोचर करेंगे।

कार्तिक शुक्ल पक्ष में वक्री **गुरु** व **शनि** क्रमशः यथावत मीन व मकर राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **शुक्र** तुला राशि में पूर्ववत बने रहेंगे। **बुध** 26 अक्टूबर को दोपहर 1.47 बजे कन्या से तुला राशि में प्रवेश करेंगे। **मंगल**- मिथुन राशि में रहते हुए 30 अक्टूबर को सायं 6.55 बजे वक्री होंगे।

शत शत नमन

जन्म दिवस

भारतीय मजूदर संघ के संस्थापक
दत्तोपंत ठेंगड़ी
10 नवम्बर

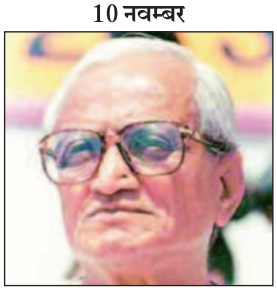

(1920-2004)

जनजातीय समाज के नायक
बिरसा मुंडा
15 नवम्बर

(1875-1900)

पुण्यतिथि

नौवें गुरु
तेग बहादुर
11 नवम्बर

(1621-1675)

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रणेता
मदन मोहन मालवीय
12 नवम्बर

(1861-1946)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 अक्टूबर, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में _____
_____
_____